प्रेम की ओर . . .

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

प्रेम की ओर . . .

प्राणियों की इन्द्रिय-शक्तियों में दृष्टि—आँखों की सजीली भेंट—वह इन्द्रिय है जो अचम्भित कर देने वाली है। एक जानी-मानी कहावत है : "आँखें आत्मा का झरोखा हैं।" क्या तुम्हें ये आँखें जड़ वस्तुओं में नज़र आती हैं, जिनमें हो सकता है कि भौतिक आँखें मौजूद न हों? जब वहाँ प्रकाश चमकने लगे तो उसकी तरफ़ क़दम बढ़ाओ।

~ गुरुमाई

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।